''राजस्थान के विभिन्न प्रबन्ध तंत्रो के माध्यमिक विधालयों में शिक्षकों की स्वायत्तता एवं व्यावसायिक संतुष्टि का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

"An Analysis of Teacher Autonomy and Job Satisfaction in differently managed Secondary Schools of Rajasthan"

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर
को पीएच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध–प्रबन्ध का प्रारूप
शिक्षा संकाय

शोधकर्त्रीः

माया देवी पाठक

शोध निर्देशकः

डॉ. नगेन्द्र सिंह

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

2016

<u>CERTIFICATE BY SUPERVISOR</u>

Certified that:-

1. I am willing to guide the research work of **Mrs. Maya Devi Pathak** on the above subject if she registered for Ph.D.
2. To the best of my knowledge the subject selected has not been studied so far in any university.
3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.
4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline and bibliography, etc. submitted by the candidate.
5. Necessary facilities are available in the department for the above research work (Certificate from Principal/Head University Department with regards to facilities available is enclosed).
6. I have ………. research candidate registered under my supervision and the serial no. of this candidate whose application being forwarded for registration is ……….
7. The candidate is not a close relation (the term close relation is defined in examination ordinance of the university).

Signature of the Suipervisor with date

Certified that the available facilities will be extended to **Mrs. Maya Devi Pathak** for research work if she registered for Ph.D.

Signature of Principal/ Director of the Institute with date

APPENDIX-IV

Format for outline of Proposed Research Work

(To be supplied in four copies)

1. Name of scholar-

(In English) : **MAYA DEVI PATHAK**

(In Hindi) : माया देवी पाठक

2. Title of Research Work-

(In English): **An Analysis of Teacher Autonomy and Job Satisfaction in differently managed Secondary Schools of Rajasthan**

(In Hindi) : ''राजस्थान के विभिन्न प्रबन्ध तंत्रो के माध्यमिक विधालयों में शिक्षकों की स्वायत्तता एवं व्यावसायिक संतुष्टि का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

3. Location-

a) Department of Education, RIE, Ajmer

4. Importance of proposed investigation, objectives	:	**Annexure-1**
5. Review of work already done on the Subject of proposed research study.	:	**Annexure-2**
6. Research gaps identified in the proposed field of investigation.	:	**Annexure-3**
7. Major hypothesis, if any	:	**Annexure-4**
8. Material and methods/research methodology	:	**Annexure- 5**
9. Bibliography	:	**Annexure - 6**

Annexure-1

INTRODUCTION, IMPORTANCE OF PROPOSED INVESTIGATION, OBJECTIVES

प्रस्तावना, शोध का महत्व एवं उद्देश्य

राष्ट्र के निर्माण में शिक्षक की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका है। परन्तु शिक्षा के क्षेत्र में कई दशकों से यह प्रश्न निरन्तर चला आ रहा है कि शिक्षकों में दक्षता के साथ–साथ स्वायत्तता है या नहीं ? जब भारत में शिक्षा संस्थाओं का प्रबन्धन राजाओं एवं शासकों के हाथ में रहा तब उनका उद्देश्य धनोपार्जन नहीं था। क्योंकि तब शिक्षकों को वेतन भोगी कर्मचारी नहीं माना जाता था। वर्तमान में परिवर्तित समाज में शिक्षा व्यावसायिक हो गई है। प्राचीन काल में विद्यादान सर्वश्रेष्ठदान समझा जाता था। उस समय तक शिक्षा लेना एवं देना दोनों ही व्यवसाय नहीं समझे गये, न तो शिक्षक धन लेकर शिक्षा देते थे और न ही छात्र धन देकर पढ़ते थे। उस समय गुरू अपने शिष्यों में उनके व्यक्तिगत मनोभावों एवं विकास की सम्भावनाओं को तलाशता था। तथा उनमें विद्या को आत्मसात करने के सभी गुर सिखाता था। (learning to learn)

1935 में लार्ड मैकाले ने अंग्रेजी भाषा के माध्यम से पाश्चात्य ज्ञान के पक्ष में अपना निर्णय लिया। उसकी शिक्षा पद्वति में अध्यापक को वेतन भोगी नौकर बनाकर उसकी स्वायत्तता छीन ली। उसके हाथ से समाज का नेतृत्व छीनकर उसे शासन का पिट्ठू बनाने का प्रयास किया भारत में मुक्ति दिलाने वाली शिक्षा को खरीद फरोख्त की चीज बना दिया और अध्यापक एक व्यवसायिक बन गया ।

ब्रिटिश साम्राज्य से लेकर वर्तमान के आजाद भारत में सभी वेतन भोगी नौकर कहलाते हैं। और उनमें से शिक्षक को छोड़कर सभी पर उनके काम के क्षेत्र में विश्वास किया जाता है। सरकारी नौकरी में सबसे निचली सीढ़ी पर गांव का पटवारी या लेखपाल होता है।यदि वह प्रमाणित कर दे कि श्री 'अ' वल्द ब के पास अमुक ग्राम में 2.5 धुर जमीन है तो उसे कोई चुनौती नहीं दे सकता। किन्तु एक शिक्षक जी जान से पढ़ाने और मूल्यांकन करने के बाद यदि यह प्रमाणित कर दे कि उसका शिष्य कक्षा दस की योग्यता या शैक्षिक उपलब्धि रखता है तो उसे कोई नहीं मानेगा अर्थात् शिक्षक अविश्वसनीय नौकर है।

शिक्षक जो कि समाज कि धुरी है। तथा सम्पूर्ण समाज को गति प्रदान करने वाला है। वह अब स्वायत्तता विहीन और व्यवसायिक हो गया है। अनेक सेवा शर्तों से जुड़कर उसको कार्य करना होता है। इससे वह उदासीन और कर्त्तव्य विहीन होता जा रहा है अब वह सिर्फ भौतिक सम्पन्नता प्राप्त करने के

लिये धनोपार्जन करना चाहता है। स्वतंत्रता से वह जीवन यापन भी कर पायेगा यह विश्वास उसमें नहीं है।

अब शिक्षक के सामने यह प्रश्न आता है कि जो पढ़ाना है। उसे कैसे पढ़ाया जाये? मैकाले प्रणाली में जिस चक्रव्यूह की रचना की गई– इन्हें ऐसे पढ़ाओ की ये पढ़ें नहीं।

भारतीय जीवन से असम्बन्धित आठ–दस महीने का शिक्षण पाठ्यक्रम उसे भी घण्टों के हिसाब से बॅाटा गया है। सभी विषयों के पाठ्यक्रम को आठ–दस महीने में समाप्त करना। प्रत्येक विषय के प्रश्न–पत्र में दस प्रश्न पूछे जायेगें। पॅाच प्रश्नों का उत्तर देना है एवं 33 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर छात्र को उत्तीर्ण कर दिया जायेगा। शिक्षक का इसमें किसी भी प्रकार का योगदान नहीं है। उसे बस सरकारी नीतियों द्वारा निर्धारित सभी कार्यों को समय पर पूरा करना है। शिक्षा मनोविज्ञान वैयक्तिक विभिन्नता पर बल देती है। लेकिन अपनी सरकार पुरानी नीतियों पर आधारित परीक्षा मूल्यांकन और प्रमाणन को नियंत्रण से मुक्त करने में डरती है। वह शिक्षकों को अपने दायित्व अर्थात् पठन–पाठन और मूल्यांकन के साथ शैक्षिक प्रमाण पत्र देने के पुनीत कर्त्तव्य से वंचित रखती है। अतः विद्यालयों में शैक्षिक माहौल बनाने के लिये शिक्षकों की स्वायत्तता आवश्यक है ताकि वे बच्चों की विविध आवश्यकताओं का ध्यान रख सकें एवं कार्य संतुष्टि प्राप्त कर सकें।

21वीं शताब्दी में भौतिकता का अत्यधिक विस्तार होने तथा ज्ञान के क्षेत्र की व्यापकता के कारण शिक्षा में अमूल्य परिवर्तन तीव्र गति से हो रहा है जिससे अध्यापकों की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों उनका स्वयं का व्यक्तित्व , अध्यापन कार्य , शिक्षक की स्वायत्तता सभी प्रभावित हो रहे हैं। क्योंकी शिक्षक के लिये अध्यापन एक प्रकार की प्रेरणा है जिसके फलस्वरूप अध्यापक अपना कार्य संम्पादित करने में आनन्द की अनुभूति करता है यह संतुष्टि केवल वैयक्तिक स्तर तक सीमित है इस की व्याख्या हम सामूहिक रूप में नहीं कर सकते क्योंकी व्यवसायिक संतुष्टि किसी शिक्षक में अन्तर्निहित उन सभी मनोवृत्तियों का परिणाम होती है। जिसे शिक्षक अपने अध्यापन व्यवसाय के काल में बनाये रखने का प्रयास करता है।

शोध का महत्व

वर्तमान समय में देखा जा रहा है कि सामाजिक परिवर्तन के साथ भौतिकता का भी अत्यधिक विस्तार हो रहा है। आज का शिक्षक समाज एवं राष्ट्र के प्रति सीधा उत्तरदायी नहीं है। आज भी वह सरकारी नीतियों की कठपुतली बना हुआ है। वह पाठयक्रम नहीं बना सकता, प्रवेश नहीं ले सकता, परीक्षा प्रणाली एवं सरकारी नीति बनाने में भाग नहीं ले सकता। वह केवल शिक्षण कराने का कार्य कर सकता है। जबकि वर्तमान में शिक्षक को स्वायत्तता के साथ कार्य संतुष्टि की भी आवश्यकता है। शिक्षक

को भी हक होना चाहिये कि वह पाठयक्रम ,प्रवेश,परीक्षा प्रणाली, वार्षिक नीतियों का निर्माण करने में योगदान दे सकें ।क्योंकी उसको पता है कि छात्र को किस प्रकार कि आवश्यकता है और उसे किस प्रकार शिक्षण करवाया जा सकता है? अतः विभिन्न प्रबन्ध संस्थानो में शिक्षक की स्वायत्तता एवं कार्य सतुष्टि के बारे में जानने हेतु अनुसंधित्सु ने अपने शोध का कार्य क्षेत्र राजस्थान के विभिन्न प्रबन्ध तंत्रो में शिक्षक की स्वायत्तता एवं कार्य संतुष्टि को जानने का संकल्प किया है। शिक्षक स्वायत्तता एवं कार्य संतुष्टि के क्षेत्र में बहुत ही कम अनुसंधान कार्य हुआ है। अतः इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुये अनुसंधित्सु ने विभिन्न प्रबन्ध तंत्रो में शिक्षक स्वायत्तता एवं कार्य सतुष्टि से संबन्धित निम्नलिखित समस्या का चयन किया है।

उद्देश्य–

1. विभिन्न प्रबंध तंत्रिय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की स्वायत्ता के मापन हेतु " शिक्षक स्वायत्तता मापनी" का निर्माण एवं प्रमाणीकरण करना |
2. विभिन्न प्रबंध तंत्रिय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के स्वायत्तता स्तर का अध्ययन करना |
3. विभिन्न प्रबंध तंत्रीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की स्वायत्तता स्तर का लिंग भेद एवं शिक्षण अनुभव के संदर्भ में अध्ययन करना |
4. विभिन्न प्रबंध तंत्रिय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि स्तर का अध्ययन करना |

विभिन्न प्रबंध तंत्रीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि स्तर का लिंगभेद एवं शिक्षण अनुभव के संदर्भ में अध्ययन करना |

5. विभिन्न प्रबंध तंत्रिय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं स्वायत्तता स्तर के मध्य पारस्परिक सहसंबंध का अध्ययन करना |
6. विभिन्न प्रबंध तंत्र माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों व्यवसायिक संतुष्टि एवं स्वायत्तता स्तर के पारस्परिक संबंध का लिंगभेद एवं शिक्षण अनुभव के संदर्भ में अध्ययन करना |

Annexure-2

Review of work already done on the Subject of proposed research study

संबधित साहित्य का अध्ययन

संसार में केवल मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो सदियों से एकत्र किये गये ज्ञान का लाभ उठा सकता है। मानव ज्ञान के तीन पक्ष होते हैं – ज्ञान को एकत्र करना,दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित करना तथा ज्ञान का संवर्धन करना। यह तथ्य शोध में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। किसी भी अनुसंधान का आरम्भ समस्या के संबधित साहित्य से होता है। जब तक अनुसंधानकर्ता को उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है? किस विधि से कार्य किया है तथा उसके निष्कर्ष क्या आये हैं? तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और ना ही उसकी रूप रेखा तैयार कर कार्य को संपन्न कर सकता है। अतः शोधकर्त्री द्वारा अन्य विद्वानों के कार्यो का निरीक्षण करते हुए अनुसंधान की कार्य विधि,तथ्यों,विचारों,सिद्वान्तों तथा उन सहायक प्रविधियों से अवगत होता है जो कि उसके लिए लाभदायक व सहायक सिद्व हो सकते हैं ।

शिक्षक स्वायत्तता से सम्बन्धित अध्ययन –

1. **जीवान हुआए जुहाँग (2010) द चेन्जिंग रोल ऑफ टीचर एन द डेवलपमेंट ऑफ लर्नर ऑटोनोमी –** बेसड ऑन ए सर्वे ऑफ ''इंग्लिश ड्रॉम एक्टिविटी'' इस अध्ययन का उद्देश्य अंग्रजी महाविद्यालय के छात्रों की सीखने की क्षमता में सुधार करना एवं स्वयं सीखने की जिम्मेदारी ले सकें। इसमें शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

   निष्कर्ष –

- शिक्षकों को स्वयं विभिन्न भूमिकाओं में दक्ष होने के लिए सुधार की आवश्यकता है।
- छात्रों को प्रेरित करने के लिए शिक्षकों को शिक्षण विधियों में सुधार लाने की आवश्यकता है।

2. **हकी इब्राहिम आन्सकिज मार्ट यूनिवर्सिटी तुर्की (2012) टीचर्स रोल एण्ड ऑटोनोमी इन इन्सट्रक्शनल प्लानिंग : दा केस ऑफ सैकन्डरी स्कूल हिस्ट्री टीचर्स विद रिगार्ड टू दा प्रिपरेशन एण्ड इम्पलीमेंन्टेसन ऑफ एनवल इन्सट्रक्शनल प्लान –**

- माध्यमिक स्कूल में वार्षिक शैक्षिक योजना बनाने व कार्यान्वयन में शिक्षकों कि भूमिका का अध्ययन ।

निष्कर्ष –

- माध्यमिक विद्यालयों के इतिहास के शिक्षकों का शैक्षिक योजना को तैयार करने में सीमित प्रभाव था ।
- इतिहास के शिक्षकों का योजना के कार्यान्वयन में भी न्यूनतम प्रभाव था।
- जो पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया था इसमें शिक्षकों का कोई योगदान नहीं था ।छात्रों कि आवश्यकता अनुसार अधिगम शैली को ध्यान में नही रखा गया था।

- कक्षाकक्ष वातावरण में शिक्षक अपनी स्वायत्तता का प्रयोग कर सकता है क्योंकि उस समय शिक्षक पर किसी का नियंत्रण नहीं रहता और वह अपनी योग्यता क्षमता एवं छात्रों कि आवश्यकतानुसार शिक्षण करवा सकता है।

3. **पियरसन कार्लेयन (2014) दा रिलेशनशिप बिटविन टीचर ऑटोनोमी एण्ड स्ट्रेस , वर्क सेटिस्फेक्शन इमपावरमेन्ट एण्ड प्रोफेशनलिज्म –**

- प्रस्तुत शा शिक्षक स्वायत्तता का कार्य तनाव कार्य सन्तुष्टि, सशक्तिकरण एवं व्यवसायिकरण के साथ सम्बन्ध का अध्ययन करने के लिए किया गया ।

निष्कर्ष –

- जैसे जैसे पाठ्यक्रम में स्वायत्तता बढ़ती है वैसे वैसे कार्य तनाव कम होता है। किन्तु पाठ्यक्रम स्वायत्तता एवं कार्य सन्तुष्टि में कम सहसम्बन्ध पाया गया ।
- सामान्य शिक्षक स्वायत्तता के बढ़ने पर सशक्तिकरण एवं व्यावसायिकरण में सकारात्मक सम्बन्ध पाया गया साथ ही कार्य सन्तुष्टि , सशक्तिकरण एवं व्यवसायिकरण बढने पर कार्य तनाव कम पाया गया।
- शिक्षक स्वायत्तता के शिक्षण स्तर प्राथमिक,माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

4. **फालाह सारा, ईरान (2014) दा रिलेशनशिप बिटविन टीचर्स मीडीएशन एण्ड ऑटोनोमी–**

- यह अध्ययन शिक्षक स्वायत्तता और शिक्षक मध्यस्थता के बीच सहसम्बन्ध ज्ञात करने के लिए किया गया। ईरान में **इंगलिश फॉरेन लेंग्वेज (EFL)** शिक्षकों पर किया गया जो कि अलग–अलग भाषा संस्थानों में शिक्षण करा रहे थे।
- पियरसन के परिणाम के आधार पर शिक्षक स्वायत्तता और मध्यस्थता के बीच सकारात्मक और महत्वपूर्ण सम्बन्ध पाये गये।

5. **टैडिक अलेक्जैंण्डर बैंगलोर यूनि. (2015) सैटिस्फेक्सन ऑफ टीचर्स नीड फॉर ऑटोनॉमी एण्ड देयर स्ट्रेटजी –**

- प्रस्तुत शोध का उद्देश्य विद्यालयों कि शिक्षक स्वायत्तता हेतु शिक्षकों कि आवश्यकता एवं कक्षाकक्ष अनुशासन में शिक्षण विधि का सहसम्बन्ध ज्ञात करने के लिए किया गया।
- इस अध्ययन हेतु 444 प्राथमिक स्कूल शिक्षकों का चयन किया गया ।

निष्कर्ष–

- शिक्षक स्वायत्तता के विभिन्न घटकों में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया ।
- शिक्षकों कि धारणा है कि विद्यालय वातावरण सदस्यों के निर्णय लेने में सक्रिय भागीदारी का समर्थन करता हैं।
- शिक्षकों कि स्वायत्तता कक्षा अनुशासन में नियंत्रण और दबाव कि धारणा में ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया गया ।

6. **वरथराज रविकुमार (2015) दा ईफेक्ट आफ टीचर ऑटोनॉमी ऑन एसेसमेन्ट प्रक्टिस अमॉग मलेशियन क्लस्टर स्कूल टीचर्स** –

- प्रस्तुत शोध में क्लस्टर विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक स्वायत्तता व उनकी कार्य कुशलता पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए मात्रात्मक अध्ययन किया गया है। इस हेतू 411 प्रशिक्षित शिक्षकों का चयन किया गया है।

निष्कर्ष –

- शिक्षक स्वायत्तता एवं कार्य कुशलता के आंकलन में अत्यअल्प समानता है।
- शिक्षक स्वायत्तता का पाठ्यक्रम स्वायत्तता आयाम ही अधिगम, विद्यार्थी स्वायत्तता, छात्रों की उपलब्धि एवं कार्य कुशलता को प्रभावित करती है।

7. **अजदेह निमाती, ईरान (2015) दा रिलेशनशिप बिटविन टीचर ऑटोनोमी एण्ड लर्नर ऑटोनोमी अमॉन्ग (EFL)स्टूडेन्ट इन बैन्द्रे अब्बास –**

- इस अध्ययन का उद्देश्य शिक्षक स्वायत्तता एवं छात्र अध्ययन स्वायत्तता अंग्रेजी और विदेशी भाषा सीखने में सह संबन्ध ज्ञात करना।

निष्कर्ष :–

- शिक्षक स्वायत्तता एवं छात्र स्वायत्तता में किसी प्रकार का सह संबन्ध नहीं पाया गया एवं छात्रों की स्वायत्तता उच्च स्तर की पायी गयी।
- इसका पैमाना जो सिर्फ भाषा शिक्षण के संदर्भ में ही प्रयोग नहीं किया जा सकता था बल्कि सभी प्रकार के सीखने में प्रयोग किया जा सकता था।

<u>व्यावसायिक संतुष्टि से संबन्धित अध्ययन</u>

1. **जोशी प्रेम कुमारी यूपी (1985)**

- **ए स्टेडी ऑफ दा एक्सप्रेस्ड एटिट्यूड ऑफ प्रोफेशनल रिलेसनशिप ऑफ टीचर ऑफ क्रिसचियन एण्ड नोन क्रिसचियन मेनेज्ड सेकण्डरी स्कूल एण्ड डिग्री कालेज इन यूपी–**
- इस अध्ययन में विभिन्न संस्थानो में कार्यरत 800 शिक्षक चुने गये। कानपुर, लखनऊ, आगरा, गोरखपुर के 380 शिक्षक ईसाई मिशनरी एवं 420 शिक्षक गैर ईसाई मिशनरी में शिक्षण करा रहे थे ।

  निष्कर्ष –
- विभिन्न प्रकार के व्यवसायिक सस्थानों के प्रबन्धन का वातावरण अलग – अलग था ।
- ईसाई संस्थानों के प्रबन्धन में दिन पर दिन प्रशासन के साथ हस्तक्षेप नहीं किया गया।
- अलग–अलग प्रबन्धन संस्थानों के शिक्षको कि अभिवृत्ति अलग अलग पाई गई ।
- ईसाई प्रबन्धन संस्थानों के प्राचार्य का व्यवहार गैर ईसाई प्रबन्धन संस्थानों के प्राचार्य से ज्यादा वांछनीय पाया गया ।
- ईसाई प्रबन्धन संस्थानों के शिक्षक अपनी संस्था और समुदाय को गैर ईसाई प्रबन्धन सस्थानों के समकक्षों से अधिक अनुकूल मानते हैं।

2. **दीक्षित एम लखनऊ (1986) प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूल शिक्षकों कि व्यवसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन –**

- प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल के शिक्षकों के बीच व्यवसायिक सन्तुष्टि, शिक्षा का माध्यम, अनुभव और अपने पेशे के साथ सन्तोष के स्तर को मापने के लिए किया गया है।

  निष्कर्ष –
- हिन्दी माध्यम के स्कूलों में प्राथमिक स्कूल शिक्षक माध्यमिक स्कूल शिक्षकों से अधिक सन्तुष्ट पाये गये।
- अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में कार्यरत प्राथमिक शिक्षक एवं माध्यमिक शिक्षकों का व्यवसायिक सन्तुष्टि स्तर बराबर पाया गया ।
- प्राथमिक स्तर के वरिष्ठ आयु के शिक्षक समूह अधिक सन्तुष्ट पाये गये जबकि मध्य आयु के शिक्षक समूह का सन्तुष्टि स्तर सबसे कम था ।
- हिन्दी माध्यम के प्राथमिक स्कूलों में पढ़ाने वाले शिक्षक अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में पढ़ाने वाले शिक्षकों से अधिक सन्तुष्ट थे ।
- माध्यमिक स्कूल शिक्षक सेवा में ज्यादा समय तक रहने से अधिक सन्तुष्ट पाये गये ।
- प्राथमिक स्तर व माध्यमिक स्तर पर महिला शिक्षक पुरूष शिक्षकों से अधिक सन्तुष्ट पाये गये।

3. **सक्सेना निरमल (1990) – ए स्टडी ऑफ सम कोरिलेट्स ऑफ जॉब सेटिस्फेक्शन इन द टीचिंग प्रोफेसन (पीएच. डी. ऐजु.)–**

निष्कर्ष –

- अभियोग्यता एवं व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य सकारात्मक सहसंबंध पाया गया।
- अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य सकारात्मक एवं निरर्थक सहसंबंध पाया गया।
- व्यावसायिक संतुष्टि सामाजिक और आर्थिक स्तर के मध्य नकारात्मक सहसंबंध पाया गया।

4. **राय शिप्रा (1992) ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ टीचर्स एटीटयूड टूवर्डस पीपुल एंड देयर जोब सेटिस्फेक्शन, पीएच. डी.–**

उद्‌देश्य –

- शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य उनकी व्यावसायिक संतुष्टि एवं बालकों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
- शिक्षकों के शिक्षण अनुभव मानसिक स्वास्थ्य और बच्चों के प्रति उनकी अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

निष्कर्ष –

- शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य व्यावसायिक संतुष्टि एवं बालकों के प्रति अभिवृत्ति में सहसंबंध पाया गया।
- शिक्षकों का शिक्षण अनुभव मानसिक स्वास्थ्य और बच्चों के प्रति उनकी अभिवृत्ति का उनकी उम्र के साथ सार्थक सहसंबंध है।

5. **शर्मा डॉ. सुनिता (2004) :– विभिन्न प्रबन्ध तंत्रो के विद्यालयों में सेवारत शिक्षकों की स्वधारणा,कृत्यसंतोष एवं अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन–**

- शिक्षकों की स्वधारणा पर विद्यालयी प्रबन्ध तंत्रो की विभिन्नता का अध्ययन करना।
- शिक्षकों की अध्यापन अभिवृत्ति पर विद्यालय के प्रबन्ध तंत्र की विभिन्नता का अध्ययन करना।
- शिक्षकों की स्वधारणा कृत्य संतोष एवं अध्ययन अध्यापन अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष–

केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित विद्यालयों में सेवारत शिक्षकों की स्वधारणा व्यवसायिक संतुष्टि तथा अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया ।

राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार द्वारा संचालित विद्यालयी स्वधारणा अन्य स्कूल शिक्षकों की अपेक्षा उच्च पायी गई ।

केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित विद्यालयों में सेवारत शिक्षकों के कृत्य संतोष में अंतर पाया गया। केन्द्र सरकार द्वारा संचालित विद्यालयों के शिक्षकों का कृत्य संतोष स्तर उच्च रहा । जबकि राज्य सरकार द्वारा संचालित विद्यालयों के शिक्षकों का कृत्य संतोष स्तर निम्न रहा ।

6. **जुमन वाई (2007) जॉब स्ट्रेस , जॉब सेटिस्फेक्शन बिटविन मेनेजरियल एण्ड टेक्निकल इज पर्सनल अध्ययन में पाया गया –**

- व्यवसायिक तनाव व जीवन सन्तुष्टि एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। जबकि व्यवसायिक तनाव और व्यवसायिक सन्तुष्टि एक दूसरे को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।
- तकनीकी स्तर के कर्मचारियों कि अपेक्षा मैनेजर स्तर के कर्मचारियों में अपने व्यवसाय के प्रति अधिक सन्तुष्टि पाई गई ।
- जो कर्मचारी अपने व्यवसाय के प्रति असन्तोष को प्रदर्शित करते हैं वे अपने जीवन से भी असंन्तुष्ट पाये गये ।

7. **एन्ड्रयू जे कनसान्स स्टेट यूनि. (2008)** दा **रिलेशनशिप लाईफ स्टाइल एण्ड जॉब सेटिस्फेक्शन टू इमरजिंग एटिट्यूड के अध्ययन में पाया गया –**

- जीवन सन्तुष्टि व व्यवसाय सन्तुष्टि के मध्य सहसम्बन्ध पाया गया।
- आयु,लिंग कार्य विधि व व्यवसाय में संलग्नता भी जीवन सन्तुष्टि व व्यवसाय सन्तुष्टि को प्रभावित करते हैं।
- व्यवसाय के प्रति उत्तरदायित्व कि भावना भी जीवन सन्तुष्टि को प्रभावित करती है।

8. **कुमार अरविंद एवं चौधरी के. के. (2010) – अशासकीय एवं विद्या भारती द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन–**

उद्देश्य–

- अशासकीय एवं विद्या भारती विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसासिक संतुष्टि का अध्ययन करना।
- अशासकीय एवं विद्या भारती द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष व महिला शिक्षकों की व्यावसासिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- अशासकीय एवं विद्या भारती द्वारा संचालित शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में कार्यरत पुरूष व महिला शिक्षकों की व्यावसासिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष–

- अशासकीय एवं विद्या भारती द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत समस्त पुरूष/महिला/शहरी/ग्रामीण शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

9. **शर्मा सुनिता (2010) :– शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं परीक्षा परिणामों का तुलनात्मक अध्ययन–**

राजकीय एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि तथा परीक्षा परिणाम को जानने के लिये अध्ययन किया गया । यह शोध झुन्झुनू जिले के विद्यालयों के 200 शिक्षकों पर किया गया ।

निष्कर्ष–

- राजकीय विद्यालयों के शिक्षक निजी विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक संतुष्ट पाये गये।
- परीक्षा परिणामों की दृष्टि से राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों तथा निजी विद्यालयों के शिक्षकों की उपलब्धि में कोई अंतर नहीं पाया गया।
- लिंग–भेद के आधार पर राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि व परीक्षा परिणामों के बारे में अंतर नही पाया गया।

10. **गुप्ता रंजना एवं मिश्रा आरती (2012) – जनपद मैनपुरी के माध्यमिक स्तर के पब्लिक विद्यालय एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन–**

उद्‌देश्य–

- माध्यमिक स्तर के शिक्षक–शिक्षिकाओं में व्यावसायिक संतुष्टि के स्तर का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के पब्लिक विद्यालय एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य स्तरों का तुलनात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष–

- पब्लिक विद्यालय के शिक्षकों एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- पब्लिक विद्यालय के शिक्षिकाओं एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

11. **महार राम (2013) – सरकारी विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन–**

उद्‌देश्य

- सरकारी विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि की तुलना करना।
- सरकारी विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों के अध्यापकों में समायोजन की जाँच करना।

- सरकारी विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि एवं समायोजन के मध्य संबंधों का अध्ययन करना।

  निष्कर्ष –

- राजकीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर पाया गया।
- राजकीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों के अध्यापकों के समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया।
- नवोदय विद्यालय के अध्यापक राजकीय विद्यालय के अध्यापकों से अधिक संतुष्ट पाये गये।

12. साहू वन्दना उदयपुर (2013):– माध्यमिक विद्यालय शिक्षको की व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन करना–

- यह अध्ययन उदयपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन करने के लिये किया गया ।

  निष्कर्ष–

- माध्यमिक स्तर के अधिकांश शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का स्तर अति उच्च पाया गया।
- महिला शिक्षकों में व्यवसायिक संतुष्टि का स्तर पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा अति उच्च पाया गया।
- निजी शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का स्तर राजकीय शिक्षकों की अपेक्षा निम्न पाया गया ।

Annexure-3

Research gaps identified in the proposed field of investigation (Based on Review)

शिक्षक राष्ट्र का निर्माता होता है और देश के भविष्य की नींव उसी के कंधों पर टिकी हुई है। वह जैसे छात्रों का निर्माण करेगा वैसे ही देश का भविष्य निर्मित होगा। वर्तमान समय में देखा जा रहा है कि सामाजिक परिवर्तन के साथ भौतिकता का अत्याधिक विस्तार हो रहा है और आज का शिक्षक समाज एवं राष्ट्र के प्रति सीधा उत्तरदायी नहीं है। शिक्षक अपनी स्वायत्ता का सीधा प्रयोग नहीं कर पा रहा है। वह आज भी शासन की कटपुतली बना हुआ है।

शिक्षक स्वयं के स्तर पर किसी भी प्रकार का निर्णय नहीं ले सकता कि छात्रों को किस प्रकार अध्ययन करवाया जाए, जिससे छात्र अधिक शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कर सकें और शिक्षक स्वयात्ता एवं व्यावसायिक संतुष्टि प्राप्त कर सकें।

अतः राजस्थान के विभिन्न प्रबंध संस्थानों में शिक्षकों की स्वायत्ता एवं कार्य संतुष्टि के बारे में जानने के लिए शोधकर्त्री ने ''राजस्थान के विभिन्न प्रबन्ध तंत्रो के माध्यमिक विधालयों में शिक्षकों की स्वायत्तता एवं व्यावसायिक संतुष्टि का विश्लेषणात्मक अध्ययन'' जानने का संकल्प किया है।

पूर्ववर्ती अध्ययनों का अध्ययन करने के उपरांत पाया गया कि राजस्थान में शिक्षक स्वायत्ता को लेकर अब से पहले पीएच. डी. स्तर पर कोई भी अध्ययन पूर्व में नहीं किया गया है। कहीं–कहीं व्यावसायिक संतुष्टि पर बहुत ही न्यून मात्रा में अध्ययन हुए हैं लेकिन इन सबको साथ लेकर इनका तुलनात्मक/विश्लेषणात्मक अध्ययन नहीं किया गया है,। जिससे इस अध्ययन को करने की आवश्यकता महसूस की गयी ताकि शिक्षक स्वायत्ता के बारे में जान सके एवं व्यावसायिक संतुष्टि प्राप्त कर सकें।

Annexure-4

Major hypothesis, if any

प्रस्तावित शोध की परिकल्पनाएँ

1.विभिन्न प्रबंध तंत्रिय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के स्वायत्तता स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता |

2.विभिन्न प्रबंध तंत्रीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के व्यवसायिक संतुष्टि स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता |

3.विभिन्न प्रबंध तंत्रीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के स्वायत्तता स्तर पर लिंगभेद का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता |

4.विभिन्न प्रबंध तंत्रीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के व्यवसायिक संतुष्टि स्तर पर लिंगभेद का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता |

5.विभिन्न प्रबंध तंत्रीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण अनुभव भिन्नता का उनके स्वायत्तता स्तर पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता |

6.विभिन्न प्रबंध तंत्रीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण अनुभव भिन्नता का उनके व्यवसायिक संतुष्टि स्तर पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता |

7.विभिन्न प्रबंध तंत्रीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के स्वायत्तता स्तर एवं व्यवसायिक संतुष्टि स्तर के मध्य पारस्परिक संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता |

Annexure- 5

Material and Methods/Research Methodology

शोध प्रविधि

माध्यमिक स्तर के जयपुर संभाग के सरकारी, नवोदय, केन्द्रीय एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के कुल 400 शिक्षकों को दत्त संकलन के लिए चुना जायेगा।

न्यादर्श–

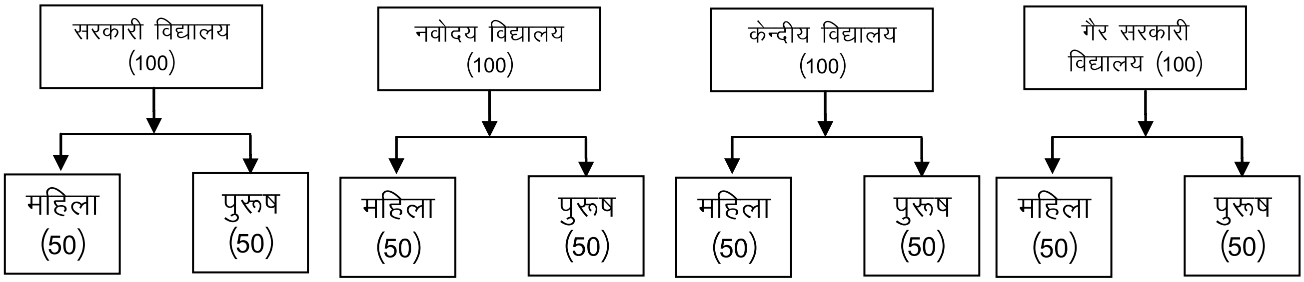

उपकरण–

- शिक्षक स्वायत्तता को मापने के लिये स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया जायेगा।
- व्यवसायिक संतुष्टि को मापने के लिये डॉ. प्रमोद कुमार एवं डी. एन. मुथेजा द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया जायेगा।

शोध विधि–

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की जा सकेगी। अनुसंधान की श्रेष्ठता विधि पर निर्भर करती है। विधि अनुसंधान प्रक्रिया को परिचालित करने का एक तरीका है जो समस्या की प्रकृति द्वारा निर्धारित है। शोधकार्य एक विशेष महत्व का उत्तरदायित्वपूर्ण सत्य कार्य है और अगर इस उत्तरदायित्व को पूर्ण करने में वैज्ञानिक व उपयुक्त विधि का प्रयोग नहीं किया जाये तो यह कार्य कभी पूर्ण नहीं हो सकता है।

प्रस्तुत शोध में विषय की समस्या को भली प्रकार समझकर, सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकाला गया कि शोध समस्या के मुख्य उद्देश्य अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि से अधिक सम्बन्धित हैं। अतः शोध की प्रकृति व सर्वेक्षण विधि की उपयोगिता के आधार पर शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत अनुसंधान में आँकड़ों के एकत्रीकरण हेतु **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया जायेगा।

अध्ययन की परिसीमाएँ–

समयाभाव व धनाभाव एवं अन्य सीमा साधनों के कारण शोध को परिसीमित किया जायेगा।

- प्रस्तावित अध्ययन केवल जयपुर संभाग तक सीमित होगा।
- प्रस्तावित अध्ययन में पूर्ववर्णित प्रशासनिक आधार पर चार प्रकार के विद्यालयों को सम्मिलित किया जायेगा ।
- इस अध्ययन में केवल माध्यमिक स्तर के अध्यापकों को सम्मिलित किया जायेगा ।
- प्रस्तावित अध्ययन में केवल 200 महिला शिक्षक एवं 200 पुरूष शिक्षकों को सम्मिलित किया जायेगा ।

अध्यायों का वर्गीकरण–

1. **प्रथम अध्याय :**

- समस्या की पृष्ठभूमि – प्रस्तावना
- समस्या का औचित्य
- समस्या कथन
- समस्या में प्रयुक्त शब्दावली का स्पष्टीकरण
- अध्ययन की परिकल्पनाएँ
- प्रस्तावित शोध के उद्देश्य
- शोध विधि
- अध्ययन की परिसीमाएँ

2. **द्वितीय अध्याय :**

- संबंधित साहित्य का अध्ययन – प्रस्तावना
- संबंधित साहित्य का अर्थ
- संबंधित साहित्य का महत्व
- संबंधित साहित्य के लाभ
- संबंधित साहित्य का स्त्रोत
- पूर्व में किए गये शोध अध्ययनों का विवरण

3. तृतीय अध्याय :

- अध्ययन विधि
- प्रयुक्त चर
- जनसंख्या एवं न्यादर्ष
- प्रयुक्त उपकरण
- प्रयुक्त सांख्यिकी

4. चतुर्थ अध्याय :

- समंको का संकलन
- समंको का सारणीयन
- समंको का विश्लेषण एवं व्याख्या

5. पंचम अध्याय :

- शोध के निष्कर्ष
- शोध के शैक्षिक निहितार्थ
- भावी अध्ययन हेतु सुझाव

Annexure – 6

Annexure – 6

BIBLIOGRAPHY

संदर्भ ग्रन्थ सूची

List of Journal/Surveys

1 Edusearch Journal of Educational Research Vol.1 (2009)

2 International Journal of Asian Social Science, (2015); 5(1) : 31-36

3 Journal of Ẹducation and Practice (2011) Vol.2, 1

4 NCERT (1981) Fourth Survey of Research in Education (1983-88) Research Vol.I, II, New Delhi

5 NCERT (2000) Fifth Survey of Research in Education (1988-1992) Vol.I, II, New Delhi

6 Research in Teacher Education, A Trend Report : B.K. Passi, D. N. Sansanwal Abstracts (1034-1177)

7 The Asian Journal of Psychology and Education Vol.44 No.3-4 Year 2011

List of Books and Research work:

8 मंगल, अंपु बरौलिया, ए एवं अग्रवाल नीलू – "शैक्षिक अनुसंधान की विधियां एवं शैक्षिक सांख्यिकी राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा, यू. पी.

9 अग्निहोत्री, रविन्द्र, : आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याएं और समाधान, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी

10 रायजादा, बी एस, "शिक्षा अनुसंधान के आवश्यक तत्व, राजस्थान ग्रंथ अकादमी, 1991 प्रथम संस्करण

11 शर्मा आर. एस., शिक्षा अनुसंधान, आर लाल बुक डिपो, मेरट, 2004

12 मेहता वी. आंर., उभरते भारतीय समाज में अध्यापक एवं शिक्षा, बी. ई. प्रथम, कोटा खुला विश्वविद्यालय।

13 जीवान हुआए जुहाँग (2010) द चेन्जिंग रोल ऑफ टीचर एन द डेवलपमेंट ऑफ लर्नर ऑटोनोमी ओहियो विश्वविद्यालय

14 हकी इब्राहिम आन्सकिज (2012) टीचर्स रोल एण्ड ऑटोनोमी इन इन्सट्रक्शनल प्लानिंग : दा केस ऑफ सैकन्डरी स्कूल हिस्ट्री टीचर्स विद रिगार्ड टू दा प्रिपरेशन एण्ड इम्पलीमेंन्टेसन ऑफ एनवल इन्सट्रक्शनल प्लान, मार्ट यूनिवर्सिटी तुर्की

15 पियरसन कार्लेयन (2014) दा रिलेशनशिप बिटविन टीचर ऑटोनोमी एण्ड स्ट्रेस , वर्क सेटिस्फेक्शन इमपावरमेन्ट एण्ड प्रोफेशनलिज्म ब्रिटानिका विश्वविद्यालय

16 फालाह सारा, (2014) दा रिलेशनशिप बिटविन टीचर्स मीडीएशन एण्ड ऑटोनोमी, ईरान

17 टैडिक अलेक्जैंण्डर (2015) सैटिस्फेक्सन ऑफ टीचर्स नीड फॉर ऑटोनॉमी एण्ड देयर स्ट्रेटजी, बैंगलोर यूनि.

18 वरथराज रविकुमार (2015) दा ईफेक्ट आफ टीचर ऑटोनॉमी ऑन एसेसमेन्ट प्रक्टिस अमॉग मलेशियन क्लस्टर स्कूल टीचर्स, मलेशिया यूनिवर्सिटी

19 अजदेह निमाती, (2015) दा रिलेशनशिप बिटविन टीचर ऑटोनोमी एण्ड लर्नर ऑटोनोमी अमॅान्ग (EFL)स्टूडेन्ट इन बैन्द्रे अब्बास, ईरान

20 जोशी प्रेम कुमारी (1985) ए स्टेडी ऑफ दा एक्सप्रेस्ड एटिट्यूड ऑफ प्रोफेशनल रिलेसनशिप ऑफ टीचर ऑफ क्रिसचियन एण्ड नोन क्रिसचियन मेनेज्ड सेकण्डरी स्कूल एण्ड डिग्री कालेज इन यूपी, इलाहाबाद यूनि. यूपी

21 दीक्षित एम (1986) प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूल शिक्षकों कि व्यवसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन लखनऊ विश्वविद्यालय

22 सक्सेना निरमल (1990) – ए स्टडी ऑफ सम कोरिलेट्स ऑफ जॉब सेटिस्फेक्शन इन द टीचिंग प्रोफेसन (पीएच. डी. ऐजु.) भोपाल विश्वविद्यालय

23 राय शिप्रा (1992) ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ टीचर्स एटीटयूड टूवर्डस पीपुल एंड देयर जोब सेटिस्फेक्शन, पीएच. डी. भोपाल विश्वविद्यालय

24 शर्मा डॉ. सुनिता (2004) :– विभिन्न प्रबन्ध तंत्रो के विद्यालयों में सेवारत शिक्षकों की स्वधारणा, कृत्य संतोष एवं अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन , सी टी ई, जामरोली जयपुर

25 जुमन ताई (2007) जॉब स्ट्रेस , जॉब सेटिस्फेक्शन बिटविन मेनेजरियल एण्ड टेक्निकल इज पर्सनल अध्ययन , कनसान्स स्टेट यूनि.

26 एन्ड्रयू जे कनसान्स स्टेट यूनि. (2008) दा रिलेशनशिप लाईफ स्टाइल एण्ड जॉब सेटिस्फेक्शन टू इमरजिंग एटिट्यूड के अध्ययन , कनसान्स स्टेट यूनि.

27 कुमार अरविंद एवं चौधरी के. के. (2010) – अशासकीय एवं विद्या भारती द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, राजस्थान यूनि. जयपुर

28 शर्मा सुनिता (2010) :– शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं परीक्षा परिणामों का तुलनात्मक अध्ययन राजस्थान यूनि. जयपुर

29 गुप्ता रंजना एवं मिश्रा आरती (2012) – जनपद मैनपुरी के माध्यमिक स्तर के पब्लिक विद्यालय एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन इलाहाबाद यूनि.

30 महार राम (2013) – सरकारी विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन, राजस्थान यूनि. जयपुर

31 साहू वन्दना उदयपुर (2013):– माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन करना– मोहनलाल सुखाड़िया यूनि. उदयपुर

Websites:

1. www.ssmrae.com/wisdom/../.pdf
2. www.shodh.ganga.com/hdl/handle.net/10603/4471
3. www.indianjournals.com/ijor.aspx?targetijor: ajdm&volume-4
4. www.eduresearch.dauniv.ac.in/file.asp?

डॉ० नगेन्द्र सिंह
Dr. Nagendra Singh

Name & Signature of Supervisor with date

Regional Institute of Education
अजमेर (राज०)/ Ajmer (Raj.)

30/5/16

Signature of Candidate with date